Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities, Vol 1 pp. 43-45, 2006
DOI: 10.51220/hjssh.v1i1.8

# पदम् पुराण में अवतारवाद

**कुसुम डोबरियाल एवं जयकृष्ण गोदियाल**
**संस्कृत विभाग, हे०न०ब० गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर पौड़ी, गढ़वाल-२४६००९, उत्तराखण्ड**

पुराण भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं। पुराकाल में चली आने वाली पौराणिक संहिताओं में तत्कालीन संस्कृति के दर्शन होते हैं। पुराणों के सभी प्रसंगों का किसी न किसी रूप में साहित्य, कला, दर्शन और विज्ञान से निकटतम सम्बन्ध हैं। अतः पुराणों के समस्त वृतान्त भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में पद्म पुराण में वर्णित् अवतार वाद की विवेचना करने का प्रयास किया गया है।

''अवतार'' शब्द की व्यत्पत्ति ''अव'', उपसर्ग पूर्वक ''तृ'' धातु ''घय्'' प्रत्यय से सिद्ध होती है। इस विषय में पाणिनी का विशिष्ठ सूत्र है -''अवे तृस्त्रेघय्'' जिससे ''अवतार'' शब्द का अर्थ है किसी ऊँचे स्थान से नीचे उतरने की क्रिया अथवा स्थान। इस सामान्य अर्थ के अतिरिक्त इसका एक विशिष्ट अर्थ भी है- किसी शक्तिसम्पन्न देवता का नीचे के लोक में ऊपर से उतरना तथा मानव या अमानव रूप धारण करना। इसी अर्थ में पुराणों में ''आविर्भाव'' शब्द का प्रगोग भी पाया जाता है। अवतार की सिद्धि दो दशाओं में मानी जाती है- एक तो रूप का परिर्वतन, दूसरा नवीन जन्म ग्रहण कर तत्तद्रूप (तत्तद्रुप) में आना। अवतार की बात किसी अलौकिक शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति या शक्ति भगवान विष्णु, शंकर या इन्द्र आदि के लिए उपयुक्त मानी जाती है। कार्यवश भगवान का बिना रूप परिर्वतन किए ही आविर्भाव होना अवतार के अन्तर्गत ही माना जाता है। जैसे विष्णु पुराण में प्रह्लाद का विपत्ति से उद्धार करने के लिए विष्णु का अपने ही रूप में आविर्भाव वर्णित है।

यह अवतारतत्व पुराण के प्रधान विषयों में अन्यतम है। अवतार का तत्व भगवान के धर्म नियामकत्व रूप पर प्रतिष्ठित है। उर्ध्व लोक से इस अधोलोक मे भगवान का उतर आना ही ''अवतार'' पद् वाच्य होता है। श्रीमद्भगवत गीता[1] का निम्न श्लोक अवतारवाद का मौलिक तथ्य प्रकट करता है :-

**यदा - यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत**
**अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।**
**परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।**
**धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे - युगे।।**

ये श्लोक अवतारवाद के मानो रीढ हैं और इन्हीं वचनों का प्रभाव पुराणों पर पड़ा है। ज्ञान

©SHARAD

का वितरण भी भगवान के अवतार का प्रयोजन है। ''कपिल'' अवतार का उद्देश्य ही तत्व-प्रसंख्यान तत्वों का निरूपण तथा आत्मा की उपलब्धि का मार्ग बतलाता था। अवतार का बीज वैदिक ग्रन्थों में स्पष्टत: मिलता है। श्रीमद्भागवत के अनुसार भगवान का प्रथम अवतार ''पुरुष'' है जिसका वर्णन ऋग्वेद के प्रख्यात ''पुरुष सूक्त'' में किया गया है। अवतारों की संख्या के विषय में महाभारत तथा पुराणों में अनेक मत दृष्टिगोचर होते हैं। अवतारवाद का मौलिक तथ्य भगवद्गीता की देन है, परन्तु गीता में दो ही अवतार निर्दिष्ट हैं-राम तथा कृष्ण। भगवान ने साधारणतया कितने अवतारों को धारण किया इस विषय में एक मत नहीं है। साधारणतया भगवान के 24 अवतार प्रसिद्ध है।

अवतार के इस क्रमबन्ध के भीतर एक वैज्ञानिक रहस्य निगूढ है। एक तो इसका सामान्य तात्पर्य सुस्पष्ट है कि भगवान को छोटी से छोटी योनि से लेकर बड़ी से बड़ी योनि तक जन्म ग्रहण करना पड़ता है। दूसरा इस क्रमबद्धता में वैज्ञानिक विकासवाद का सिद्धान्त छिपा है। उन्नीसवीं सदी के मध्यभाग में डारविन विकासवाद (थ्योरी आफ नेचुरल सलेक्सन) का तत्व पश्चिमी जगत में प्रतिष्ठित हुआ। सृष्टि के विषय में विकासवाद का तात्पर्य है कि सृष्टि आरम्भ लघुकाय जीवों (अकोशिकीय जीवों) में आविभूर्त हुआ। इस अवतारतत्व की समीक्षा विकासवाद की भित्ति पर निसंदेह आधारित प्रतीत होती है। सबसे पहले सृष्टि का आरम्भ जलीय प्राणी से होता है, मत्स्य उसी का प्रतीक है। आगे चलकर कल्कि के अवतार मे हम प्राणियों के वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान-कारण रूप में पाते हैं।

अवतारवाद पौराणिक साहित्य का विशिष्ट क्षेत्र है परन्तु अवतारों का मूल श्रोत वेद है-मन्त्रब्राह्मणात्मक वेद, जहाँ से ये संग्रहीत कर विभिन्न पुराणों में उपन्यस्त तथा चित्रित हैं पुराणशास्त्र सभी श्रेणी में मनुष्यों को भगवान के आविर्भाव और लीलाओं की दृष्टि से इन स्थानों का चिन्मय भगद्धामरूप में दर्शन करने की शिक्षा देते हैं। पद्म पुराण[2] में ''पृथ्वीकृतवराहस्तुतिवर्णनम्''नामक प्रसंग में भगवान विष्णु का वराह (शूकर) अवतार धारण कर जल में निमग्न पृथ्वी का उद्धार कर उसे समान कर द्वीप, पहाड़ो की रचना करके ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की रचना करवाई गई है। भगवान विष्णु द्वारा ही दूसरे ''वामनावतार'' का प्रसंग ''वामनावतारचरित्रवर्णनम्'' में आता है। दानवों का विनाश करने के कारण श्री विष्णु ने वामन (बौना ब्राह्म) रूप धारण किया और त्रिलोकी को जीतने वाले दैत्यराज वाष्कलि से तीन पद भूमि की याचना की तथा वामन का विराट रूप धारणकर तीनों लोकों को वाष्कलि से मुक्त करवाया। पुन: विष्णु के द्वारा दूसरी वार वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर में वामन रूप धारण कर अकेले ही यज्ञ पर्वत पर जाकर राजा बलि का संयमन किया गया उस अवसर पर भगवान का पुन: वामनअवतार हुआ।

रूप परिर्वतन के द्वारा भगवान का आविर्भाव पद् पुराण में दृष्टिगोचर होता है। '' नृसिंहावतार'' का विवेचन भी प्रस्तुत खण्ड में किया गया है। हिरण्यकश्यिपु के बध के प्रसंग में भगवान नृसिंह की

पुण्यकथा अन्य पुराणों की तरह पद्म पुराण में भी उद्धृत की गई हैं। सर्वान्तरयामी विष्णु भगवान के द्वारा रूप परिर्वतन कर दैत्य हिरण्यकश्युप, जो किसी के द्वारा भी न मारा जाने योग्य था, भगवान ने आधा पुरुष और आधा सिंह का रूप धारण कर उस अहंकारी व सुरपुर का अधिपति पद छीनकर उसे अपने नखों से चीर दिया। इस प्रकार विष्णु विलक्षण अवतार धारण कर अधोलोक में कल्याणार्थ प्रविष्ट होते हैं। पुराणों में ''वामनावतार'' की कथा है, ऋग्वेद में भी देखा जाता है कि विष्णु तीन पाद प्रक्षेपों से आश्रित जनों पर अनुग्रह करते हैं। इसी प्रकार पुराणों की ''वराहवतार'' की कथा वेदों में भी देखी जाती है। पद्म पुराण के उत्तरखण्ड[3] में विष्णु दशावतार के हेतुओं का वर्णन है। इस प्रकार पद्म पुराण में मत्स्य, कूर्म, वामन, वराह, नृसिंह, राम, कृष्ण, बलराम, बुद्ध, कल्कि, दस अवतारों का विशद् वर्णन है।

**मत्स्य : कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामनः।**

**रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कलिकश्च ते दश।।**

**सन्दर्भ ग्रन्थः-**

1- गीता, 4/3-4

2- पद्म पुराण, सृष्टि-खण्ड, 31/9-11

3- पद्म पुराण, उत्तरखण्ड, 257/40-41